

संपादकीय

धनबल का बोलबाला

आम चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ ही देश में चुनाव सुधार के गुरुे फिर से चर्चा में आ गए हैं। काले धन पर रोक लगाने और नकदी का लेन-देन घटाने के लिए ढाई साल पहले नोटबंदी जैसा ऐतिहासिक कदम उठाया गया था। इसके बावजूद कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार चुनावी खर्च के सारे रिकॉर्ड टूटने वाले हैं। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज (सीएमसी) के अनुसार, इस चुनाव में 50 हजार करोड़ रुपए तक खर्च हो सकते हैं। कानेंगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के मुताबिक, साल 2019 का भारतीय आम चुनाव अमेरिकी चुनावी खर्च को भी पीछे छोड़ देगा। इसने ब्यौरा दिया है कि 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव और संसदीय चुनावों में 650 करोड़ डॉलर (मौजूदा विनियम दर के अनुसार 46,211 करोड़ रुपये) खर्च हुए थे। इसके बरक्स भारत में 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में 35,547 करोड़ रुपये (500 करोड़ डॉलर) खर्च हुए थे।

लेकिन भारतीय आम चुनाव-2019 में अमेरिकी चुनावों के खर्च का अंकड़ा आसानी से पार हो सकता है। ऐसा हुआ तो यह दुनिया का सबसे खर्चाली चुनाव होगा। देश में चुनावों पर होने वाले अथाह खर्च को भारतीय जनतंत्र की एक बड़ी भीमारी के रूप में देखा जाता है। इसमें भारी मात्रा में काले धन का लेन-देन होना एक बात है, पर इसमें भी भुगतान यह है कि साधारण भारतीय जन चुनाव प्री या से बाहर हो गए हैं और व्यवस्था तेजी से धनवानों के कब्जे में जा रही है। यहीं नहीं, चुनाव में भारी रकम फूंकने की बाध्यता ने राजनीतिक नेतृत्व को छाँट बनाया है, जिसके चलते संतुलनकारी शक्ति के रूप में उसकी भूमिका सदिगंध हो गई है। इस समस्या से निपटने के लिए चुनाव आयोग ने खर्च सीमा तय करने और घंटे की व्यवस्था में पारदर्शिता लाने की पहल की लेकिन उसके हर कदम का तोड़ पार्टीयों ने निकाल लिया। दिखावे के लिए उन्होंने आय-व्यय के आंकड़े जरूर पेश किए, पर इस मामले में पारदर्शिता बरतने पर कर्तव्य राजी नहीं हुई।

अभी हर लोकसभा प्रत्याशी के चुनाव खर्च की सीमा 70 लाख रुपए तय की गई है, जो 2014 में 28 लाख थी। खर्च के लिए एक बार में 10 हजार रुपए से अधिक नगद राशि कोई उम्मीदवार किसी को नहीं दे पाएगा। प्रत्याशी को नया ढाँच खाता खुलवाना पड़ेगा, जिसकी जानकारी जिला निर्वाचन दफ्तर को देनी होगी। लेकिन ये सारे निर्देश व्यवहार में किस हड्ड तक लागू होंगे, इसका कुछ अंदाज चुनाव तिथियों की घोषणा से ठीक पहले आई विज्ञापनों की बाढ़ को देखकर लगाया जा सकता है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिपोर्टर्स (ईडीआर) जैसी संस्थाएं चुनाव के बाद बताती हैं कि अमुक पार्टी ने इतने खर्च किए या इतने बहुबली चुनाव जीत गए। अपनी इस भूमिका को लेकर चुनाव के दौरान भी उन्हें सचेत रहना चाहिए। नियमों का उल्लंघन होते ही उन पर चर्चा हो तो शायद हालात बढ़ते।

सफलता के लिए नजरिया बदलें, हालात खुद-ब-खुद बदलेंगे

कई बार जो चीजें दूसरों हैंकिंग भी हैं। यह अपराध की के लिए गलत होती हैं, उन्हीं में श्रेणी में आता है, मगर इसे महारत हासिल कर लोग एथिकली किया जाए तो सरकार सफलता की सीधियां और समाज के बढ़ते चले जाते हैं। जब हम नजरिया बदलने की बात करते हैं, तो उसका मतलब यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए।

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भी बढ़ा है। हाल ही में एक साइबर हमले में पुणे के 'कोसमोस बैंक' से 94 करोड़ रुपये चुरा लिए गए। इसी तरह डिजिटल वर्ल्ड में

लिए

काम का भी हो सकता है। हमारी आज की कहानी में भी कुछ ऐसा ही कहा गया यह है कि किसी भी मुद्रे को देखें का है। मोबाइल जैसे डिजिटल उपकरणों पर निर्भरता बढ़ने से साइबर अपराधों का खतरा भ